Dr. Gautam Kumar.
B.A(H), PART-I (Pol.Sc)
PAPER-II

Date
Page

अरविन्द घोष का राष्ट्रवाद का सिद्धांत (आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की धारणा)

(Theory of Nationalism of Aurbindo Ghosh)

श्री अरविन्द भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। श्री अरविन्द की समस्त राजनीतिक विचारधारा में यदि कोई बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, तो वह उनका राष्ट्रवाद का सिद्धांत या आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की धारणा है। अरविन्द की इस धारणा का महत्व इस दृष्टि से है कि जहाँ भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्य नेताओं और पाश्चात्य विचारकों ने राष्ट्रवाद का प्रतिपादन एक राजनीतिक धारणा के रूप में किया; अरविन्द ने राष्ट्रवाद का प्रतिपादन एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक धारणा के रूप में किया। अरविन्द राष्ट्र को एक मनोवैज्ञानिक इकाई मानते थे। श्री अरविन्द राष्ट्रवाद को राष्ट्र और नागरिक दोनों के लिए वरदान मानते थे। उन्होंने स्वतंत्रता की माँग करके भारतीय राष्ट्रवाद के चिन्तन को एक नई शक्ति दी। उनका राष्ट्रवाद हिंसात्मक उग्रवाद की भावना से सर्वथा मुक्त था। श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद इतिहास की भावनाओं से अनुप्रेरित था। उन्होंने राष्ट्रवाद को धार्मिक और आध्यात्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित करते हुए कहा कि राष्ट्रीयता केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है, राष्ट्रीयता एक धर्म है, जो ईश्वर प्रदत्त है। राष्ट्रीयता एक सिद्धांत है, जिसके अनुसार हमें जीवित रहना है। उन्होंने स्वदेश को माँ माना, माँ के रूप में उसकी भक्ति की, पूजा की। उन्होंने देशवासियों से भारत

Scanned with CamScanner

माता की रक्षा और सेवा के लिए हरेक प्रकार के कष्टों को सहन करने की अपील की। उनका कहना था कि "राष्ट्रीय मुक्ति का प्रयत्न एक पवित्र यज्ञ है, जिसमें बहिष्कार, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और अन्य कार्य छोटी बड़ी आहुतियां हैं। इस यज्ञ का सुफल स्वतंत्रता है, जिसे हम देवी भारत माता को अर्पित करेंगे।" राष्ट्रवादी बनने के लिए, राष्ट्रीयता के इस धर्म को स्वीकार करने के लिए हमें धार्मिक भावना का पूर्ण रूप से पालन करना होगा। उन्होंने जनसाधारण को राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक स्वरूप स्पष्ट किया और कहा कि राष्ट्रवाद "दैवी शक्ति का प्रतीक है।" श्री अरविन्द ने राष्ट्रवाद को ईश्वरीय आदेश एवं प्रेरणा बताकर भारतीयों में एक नवीन चेतना का संचार किया।

स्वराज्य राष्ट्र की आत्मा है :— श्री अरविन्द की मान्यता थी कि स्वराज के बिना राष्ट्र मृतक के समान है। स्वराज्य के बिना/अभाव में राष्ट्र की आत्मा भटकती रहती है। स्वराज्य राज्य का आभूषण ही नहीं अपितु नैतिक आवश्यकता भी है। श्री अरविन्द का मानना था कि भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म ही स्वतंत्रता की आंकाक्षा के साथ हुआ है इसलिए कोई भी राष्ट्र स्वराज्य के बिना अपनी उन्नति के मौलिक सिद्धान्त का निर्माण नहीं कर सकता। श्री अरविन्द का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता भारत की सब प्रकार की उन्नति के लिए अनिवार्य है इसलिए उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता को भारतीयों का लक्ष्य बताया। उन्होंने स्वराज्य को एक प्रेरणा के रूप में तथा राष्ट्रवाद को एक शक्ति के रूप में अनुभव किया था। उन्होंने स्वराज्य की भावना को राष्ट्रीय जीवन में ओत-प्रोत करके नये मापदण्डों की स्थापना की थी। इस प्रकार अरविन्द का राष्ट्रीयता का दृष्टिकोण नूतन और बहुत अधिक उदार था॥